पूरक पाठ्यपुस्तक (संचयन भाग-1)

गिल्लू (महादेवी वर्मा)

पाठ का सारांश

लेखिका को गिल्लू का स्मरण–लेखिका अपने आँगन में लगी सोनजुही की पीली कली को निहार रही थी। उसे देखकर लेखिका को गिलहरी के उस बच्चे गिल्लू की याद आ गई, जो सोनजुही की पीली कली के समान ही था और इस लता की सघन हरियाली में छिपकर बैठा रहता था।

लेखिका के जीवन में गिल्लू का आगमन–एक दिन सवेरे लेखिका ने अपने कमरे से बरामदे में आकर देखा कि दो कौए गमले के पास किसी चीज़ को चोंच मार रहे थे। उन्होंने पास जाकर देखा कि वह गिलहरी का बहुत छोटा बच्चा था, जो शायद घोंसले से गिर गया था। कौए उसे अपना आहार बनाना चाहते थे। चोंच के प्रहार से वह निश्चेष्ट हो गया था। लेखिका उसे उठाकर अपने कमरे में ले आईं और उसका उपचार किया। दो-तीन दिन में वह बच्चा स्वस्थ हो गया। लेखिका ने उसका नाम गिल्लू रखा।

गिल्लू का पालन-पोषण–तीन-चार मास का होने पर गिल्लू एक सुंदर जीव दिखाई देने लगा। उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करती थीं। लेखिका ने फूल रखने की एक डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की में लटका दिया। यही दो साल तक गिल्लू का आवास रहा। उसे खाने के लिए काजू दिए जाते थे। इस प्रकार बड़े ध्यान से उसका पालन-पोषण किया गया।

गिल्लू का लेखिका से लगाव–गिल्लू को लेखिका से बहुत लगाव था। वह हमेशा उनके पास रहना चाहता था। लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह उनके पैर तक आता और सर्र से परदे पर चढ़ जाता तथा फिर उतनी ही तेज़ी से नीचे उतर जाता था। ऐसा वह तब तक करता रहता, जब तक लेखिका उसे पकड़ न लेती। कभी-कभी लेखिका जब उसे लिफ़ाफ़े में बंद कर देती तो वह अपना मुँह निकालकर चारों ओर देखता रहता। गरमियों के दिनों में वह लेखिका की पानी की सुराही पर चिपककर लेट जाता। जब लेखिका बाहर से आतीं तो वह कूदकर उनके कंधे पर चढ़ जाता था। इस प्रकार वह हर समय लेखिका के पास ही रहना चाहता था।

गिल्लू की संवेदनशीलता–गिल्लू लेखिका के प्रति बहुत संवेदनशील था। एक बार जब लेखिका को मोटर-दुर्घटना के कारण अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा तो गिल्लू बहुत उदास रहने लगा। उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया था। जब लेखिका घर वापस आईं तो गिल्लू ने परिचारिका की तरह उनकी सेवा की। वह घंटों उनके सिरहाने बैठकर अपने पंजों से उनका सिर और बाल सहलाता रहता था।

लेखिका की दृष्टि में गिल्लू की विशिष्टता–लेखिका को पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम था। उन्होंने बहुत-से पशु-पक्षी पाल रखे थे। सभी पशु-पक्षियों को लेखिका से बहुत लगाव था, लेकिन किसी की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे लेखिका की थाली में खाना खा सकें। गिल्लू इसका अपवाद था। जब लेखिका खाने की मेज़ पर बैठतीं तो वह भी वहाँ आ जाता और लेखिका की थाली से बैठकर खाना चाहता। लेखिका ने बड़ी मुश्किल से उसे थाली के पास बैठना सिखाया। वह थाली से एक-एक चावल का दाना उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता था। इस प्रकार गिल्लू लेखिका की दृष्टि में विशिष्ट था।

गिल्लू का अंत–गिलहरियों की आयु दो वर्ष होती है। गिल्लू का अंत समय आ गया था। मृत्यु वाले दिन उसने कुछ नहीं खाया। वह बाहर भी नहीं गया। रात में मृत्यु की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर आ गया और अपने ठंडे पंजों से लेखिका की अँगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया। प्रातःकाल की पहली किरण के साथ ही उसने प्राण त्याग दिए।

लेखिका ने सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी; क्योंकि यह लता उसे बहुत प्रिय थी। लेखिका को विश्वास है कि वह छोटा प्राणी एक दिन सोनजुही के पीले फूल के रूप में अवश्य खिलेगा।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : गिल्लू लेखिका को किस अवस्था में मिला? उन्होंने उसका उपचार कैसे किया? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर : एक दिन अचानक लेखिका ने बरामदे में आकर देखा कि दो कौए किसी चीज़ को चोंच मार रहे हैं। वह गिलहरी का एक छोटा-सा बच्चा था, जो शायद घोंसले से गिर गया था। कौए उसे अपना आहार बनाना चाहते थे। कौओं की चोंच के प्रहार से वह घायल हो गया था और निश्चेष्ट भी हो गया था। लेखिका उसे उठाकर अपने कमरे में लाई। उन्होंने रुई से उसका बहता रक्त पोंछा और उसके घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। रुई की बारीक बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह में डाला, लेकिन वह अंदर नहीं गया। फिर किसी तरह एक बूँद पानी उसके मुँह में गया और वह छोटा जीव चेतन हुआ। लेखिका ने उसका नामकरण किया–गिल्लू। उन्होंने बड़े प्यार से उसका पालन-पोषण किया। इन सब बातों से पता चलता है कि लेखिका पशु-पक्षियों और जीव-जंतुओं के प्रति बहुत संवेदनशील हैं।

प्रश्न 2 : सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन-से विचार उमड़ने लगे?

उत्तर : सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका उस छोटे-से जीव (गिल्लू) को याद करने लगीं, जो उस लता की सघन हरियाली में छिपकर बैठा रहता था और लेखिका के पास आते ही उसके कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। लेखिका विचारकर रही हैं कि उस समय वह इस लता में कली को खोजती रहती थीं, लेकिन आज उसे उस छोटे-से प्राणी की खोज है।

प्रश्न 3 : पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा है?

उत्तर : धार्मिक मान्यता के अनुसार पितरपक्ष में हमारे पूर्वज कौए के रूप में आते हैं, जिन्हें हम श्रद्धापूर्वक बलि प्रदान करते हैं। दूसरे छत की मुंडेर पर बैठकर जब कौआ बोलता है तो उसे हमारे किसी प्रियजन के आने की सूचना माना जाता है। इन दो बातों से वह समादरित है। दूसरी ओर हम कौआ और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं; इस रूप में कौआ अनादरित है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 4 : जीव-जंतु भी मनुष्य की तरह संवेदनशील होते हैं। 'गिल्लू' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर : जीव-जंतु भी मनुष्य की तरह सुख-दुःख, प्रेम-घृणा आदि को महसूस करते हैं। वे भी संवेदनशील होते हैं। 'गिल्लू' पाठ में दिखाया गया है कि छोटा-सा प्राणी गिल्लू अपनी स्नेहदात्री लेखिका से अत्यधिक स्नेह रखता है। उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए वह तरह-तरह के क्रियाकलाप करता है। उसी के पास बैठकर भोजन करता है। जब लेखिका दुर्घटना के कारण अस्पताल में भर्ती हो गई तो गिल्लू ने खाना-पीना भी छोड़ दिया। जब वह अस्पताल से घर आ गई तो वह लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने पंजों से उसके सिर और बालों को सहलाता और अपना स्नेह प्रकट करता। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जीव-जंतु भी मनुष्य की तरह संवेदनशील होते हैं।

प्रश्न 5 : गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

उत्तर : गिलहरी के घायल बच्चे को उठाकर लेखिका अपने कमरे में ले आईं। उसके घावों से रक्त पोंछकर उन पर पेंसिलिन का मरहम लगाया गया। रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर उसके नन्हें मुँह में लगाई गई, लेकिन दूध उसके मुँह में नहीं जा सका। कई घंटों के उपचार के बाद पानी की एक बूँद उसके मुँह में जा सकी, तब वह थोड़ा स्वस्थ महसूस कर पाया।

प्रश्न 6 : 'गिल्लू' कहानी मात्र एक गिलहरी को बचाने की कहानी नहीं है, बल्कि जीव-मात्र के प्रति मनुष्य की संवेदनशीलता को जगाने का प्रयास है–सिद्ध कीजिए।

उत्तर : लेखिका महादेवी वर्मा एक संवेदनशील महिला थीं। उन्होंने अनेक पशु-पक्षी पाले हुए थे। वे पशु-पक्षियों में भी मानवीय सुख-दुःख की अनुभूति करती थीं। एक दिन उन्होंने देखा कि उनके घर के गमलों में उगे पौधों के पास दो कौए गिलहरी के एक बच्चे को चोंच मार-मारकर घायल कर रहे हैं। उसे देखकर उनके मन में करुणा जाग उठी। वे उसे अपनी हथेली पर रखकर कमरे में लाईं और उसके घावों को साफ़ करके मरहम लगाया। रुई की बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह में दूध की बूँदें डालने का प्रयास किया। इस प्रकार दो-तीन दिन के उपचार और सेवा के बाद वह गिलहरी का बच्चा स्वस्थ हो गया।

'गिल्लू' कहानी के द्वारा लेखिका ने हमारे मन में निरीह प्राणियों के प्रति करुणा और संवेदना जगाने का प्रयास किया है। उन्होंने बताना चाहा है कि जीव-जंतु भी परमात्मा की संतान हैं। उन्हें भी सुख-दुःख की अनुभूति होती है। वे हमारा ध्यान अपनी ओर चाहते हैं; अतः हमें उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उनके प्रति संवेदना रखनी चाहिए।

प्रश्न 7 : गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

उत्तर : लेखिका एक दुर्घटना में घायल हो गई थीं, जिसके कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। जब वे घर वापस आईं तो गिल्लू उनके सिरहाने तकिये पर बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से लेखिका के सिर और बालों को एक परिचारिका की तरह सहलाता था। इस प्रकार वह एक परिचारिका की भूमिका निभा रहा था।

प्रश्न 8 : लेखिका को पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम था। उनके घर में बहुत से पशु-पक्षी थे, लेकिन गिल्लू उनमें विशिष्ट था। कैसे?

उत्तर : लेखिका महादेवी वर्मा को पशु-पक्षियों से बहुत लगाव था। उन्होंने अपने घर में गाय, कुत्ता, मोर, हिरण, नेवला आदि पाले हुए थे। सभी पशु-पक्षी लेखिका को बहुत प्रेम करते थे, लेकिन गिल्लू का इनमें विशिष्ट स्थान था। किसी भी जीव को लेखिका की थाली में खाने की छूट नहीं थी। गिल्लू इसका अपवाद था। जैसे ही लेखिका खाने के कमरे में पहुँचतीं, गिल्लू भी वहाँ पहुँच जाता था। वह खाने की मेज़ पर चढ़कर लेखिका की थाली में बैठकर खाना चाहता था, लेकिन लेखिका ने उसे बड़ी मुश्किल से थाली के पास बैठना सिखाया। वह लेखिका की थाली से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता था। इससे पता चलता है कि लेखिका के सभी पालतू जानवरों में गिल्लू का विशिष्ट स्थान था।

प्रश्न 9 : 'गिल्लू को लेखिका का साथ अत्यधिक पसंद था', इस कथन का तर्कसहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : निम्नलिखित बातों से सिद्ध किया जा सकता है कि गिल्लू को लेखिका का साथ अत्यधिक पंसद था–

(i) जब लेखिका बाहर से अपने कमरे में आतीं तो गिल्लू उनके शरीर पर ऊपर-नीचे दौड़ लगाने लगता।

(ii) गरमियों के दिनों में वह उनके पास रखी पानी की सुराही से चिपका रहता था।

(iii) जब लेखिका दुर्घटना के कारण अस्पताल में भर्ती हो गईं तो गिल्लू ने खाना-पीना छोड़ दिया और जब वे घर आईं तो उसने परिचारिका की तरह उनकी सेवा की।

(iv) अपने अंतिम समय में भी गिल्लू आकर लेखिका की अँगुली से चिपक गया था।

प्रश्न 10 : "घायलों की सहायता के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है"– गिल्लू के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि किसी घायल के प्रति आपके व्यवहार में क्या विशेषता होगी?

उत्तर : किसी घायल व्यक्ति की सहायता एवं उपचार में बहुत धैर्य और कोमलता की आवश्यकता होती है। घायल व्यक्ति असहाय, लाचार और शारीरिक रूप से अक्षम हो जाता है। वह मानसिक रूप से बहुत खिन्न होता है। उसका चिल्लाना, कराहना, क्रोध और व्याकुलता देखकर हमें धैर्य नहीं खोना चाहिए। उसके प्रति हमारा व्यवहार करुणा से युक्त और कोमल होना चाहिए। पाठ में लेखिका महादेवी ने गिल्लू के उपचार में बहुत धैर्य और कोमलता का परिचय दिया। उन्होंने धीरे-से उसके घावों को साफ़ किया, मरहम लगाया, उसे रुई की बत्ती से दूध और पानी पिलाया तथा दो-तीन दिन तक धैर्यपूर्वक उसकी सेवा की। इसी धैर्य के कारण गिल्लू स्वस्थ हो सका।

गिल्लू के संदर्भ से स्पष्ट हो जाता है कि किसी घायल की सहायता और उपचार के लिए हमारे व्यवहार में धैर्य, सहनशीलता और कोमलता जैसे गुणों का होना आवश्यक है।

प्रश्न 11 : गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

उत्तर : लेखिका ने देखा कि वसंत के समय में बाहर की गिलहरियाँ आकर खिड़की की जाली के पास बैठकर चिक-चिक कर कुछ कहने लगती थीं; इससे गिल्लू उनकी ओर आकर्षित हो रहा था। उसे जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते हुए देखकर लेखिका को लगा कि अब गिल्लू को मुक्त कर देना चाहिए। इसके लिए लेखिका ने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया। इससे गिल्लू के बाहर जाने का रास्ता बन गया।

प्रश्न 12 : सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

उत्तर : सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिका के मन में यह विश्वास है कि एक दिन गिल्लू इसी लता के एक चटक फूल के रूप में जन्म लेगा। यही कारण है कि सोनजुही पर लगी पीली कली को देखकर उसे गिल्लू की याद आ गई।

प्रश्न 13 : लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

उत्तर : लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उसके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह क्रम तब तक चलता, रहता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठतीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 14 : गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?

उत्तर : गिल्लू की दिनचर्या में परिवर्तन आ गया था। उसने दिनभर न कुछ खाया और न ही वह बाहर गया। रात में जीवन के अंत की यातना में भी वह अपने झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया और अपने ठंडे पंजों से उसकी अँगुली पकड़कर हाथ से चिपक गया। लेखिका ने गरमाहट देने के लिए हीटर भी जलाया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ और नन्हा जीव चल बसा।

प्रश्न 15 : मनुष्य के प्रेम की सीमाएँ अनंत हैं। वह चाहे तो पशु-पक्षियों में भी प्रेम-भरा संसार ढूँढ़ सकता है। इस दृष्टि से महादेवी वर्मा के पशु-प्रेम पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : 'गिल्लू' संस्मरण महादेवी वर्मा के पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम और संवेदना को अभिव्यक्त करता है। उन्होंने अपने घर में गाय, कुत्ता, बिल्ली, हिरण, मोर, नेवला, गिलहरी आदि पशु-पक्षी पाले हुए थे। वे उन्हें अपने परिवार के सदस्य की तरह प्रेम करती थीं। उन्होंने प्रत्येक का सुंदर नाम भी रखा हुआ था। सामान्यतः लोग गिलहरी जैसे छोटे से जीव से भी डरते हैं। परंतु महादेवी ने न केवल घायल गिल्लू का उपचार किया, बल्कि आजीवन उसके रहने-खाने का प्रबंध किया। उन्होंने उसे प्यार और संस्कार दिया। उसे थाली के पास बैठकर भोजन करना सिखाया। उसके मनोभावों को समझकर समय आने पर उसे मुक्त किया। जब गिल्लू की मृत्यु निकट आई तो महादेवी जी ने उसे बचाने का हर-संभव प्रयास किया। उन्होंने मृत्यु के उपरांत उसकी समाधि भी बनाई। इससे हमें महादेवी जी की महानता और संवेदनशीलता का पता चलता है और साथ ही यह भी सिद्ध होता है कि यदि व्यक्ति चाहे तो पशु-पक्षियों में भी अपना प्रेम-भरा संसार ढूँढ़ सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in